स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

'मानविकी संकाय' के अंतर्गत 'हिन्दी' विषय में पीएच्.डी. ('विद्यावाचस्पति')
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की प्रथम रुपरेखा

"भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में व्यक्त जन जीवन"

शोध-छात्र

प्रा.महेबुब शरफोद्दीन मंगरुले

एम.ए., एम.फिल.

हिंदी विभाग

आझाद महाविद्यालय,

औसा, जिला : लातूर।

शोध-निर्देशक

डॉ.रणजीत जाधव

हिंदी विभागाध्यक्ष

कै. व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय, बाभळगाव

ता.जि.लातूर

अनुसंधान-केंद्र

दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

मई 2019

"भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में व्यक्त जन जीवन"

भूमिका :-

भारतीय जन जीवन एवं भारतीय समाज को जानने की उत्सुकता विश्व की लगभग आबादी मे पाई जाती है। भारत की नैसर्गिक संपन्नता, धर्म और संस्कृति में पाई जाने वाली विविधता तथा इस विविधता में भी एकता होने के कारण यह दिलचस्प बनी है इसी अनुसार विश्व भर की नजरें भारत की भूमि पर गडी हैं। यहां की विविध जनजातियां, उनके खान-पान, रस्मो रिवाज आदि पर कई अध्ययन भी हुए हैं। उपर्युक्त सभी अध्ययनों को आधार मानकर कहा जा सकता है कि भारतीय समाज जीवन अपने आप में एक दर्शन है। यहां के खानपान, त्यौहार, परंपराएं इसे संपन्न बनाते हैं। भारती जन जीवन में कई ऐसे घटक हैं जिसके कारण उसे नया मोड मिलता है, या उसमें उथल पुथल होती है, जैसे समाज जीवन, राजनीति, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति, धर्म एवं संस्कृति आदि से जनजीवन प्रभावित होता है।

हिंदी एवं विविध भाषाओं के साहित्यकारों ने जिस प्रकार से भारतीय जन जीवन का चित्रण किया हुआ है वह दिलचस्प तो है ही साथ ही साथ सोचनीय भी। हिंदी साहित्य के उभरते हुए साहित्यकार व भुवनेश्वर उपाध्याय ने भारतीय जन जीवन का सशक्त चित्रण किया है। उनके साहित्य में बेहतर जीवन जीने की छटपटाहट करने वाले समाजियों का जीवंत चित्रण है, जो वर्तमान परिस्थितीयों को उजागर करता है। उपाध्याय जी का साहित्य जीवन के हर पहलू को सरल भाषा में अभिव्यक्त करता है, जिससे सामाजिक बदलाव, रिश्तों का बनावटीपन, अर्थ की लालसा आदि के कारण जन जीवन जटिल बनता हुआ दिखाई देता है।

अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में होने के कारण मैं एक बेहतर पाठक एवं समीक्षक बना, जिसने मेरे अंदर के सामाजिक को जागृत किया। प्रेमचंद, अज्ञेय, नासिरा शर्मा, मन्नू भंडारी, मेहरुन्निसा परवेज, मिथिलेश्वर, नरेंद्र कोहली, मैत्रयी पुष्पा आदि साहित्यकारों के साहित्य में चित्रित समाज जीवन को पढने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसके माध्यम से वर्तमान समाज और सामाजिक स्थिति का बोध होता है। समाज कितना जटिल बन गया? परिस्थितियां कितनी विदारक हो गई? प्रेम, त्याग एवं समर्पण की बातें खोखली साबित होती नजर आर रही हैं। प्रेमचंद एवं समकालीन साहित्यकारों ने बेबाक सच्चाई लिख समाज में फैली कुरीतियों का पर्दाफाश किया था। उसी कुरीतियों ने आज भयानक रुप ले लिया है। फलस्वरुप समाज का चारित्रिक पतन हो रहा है। परिस्थितियां विकृत बन गई।

आधुनिक लेखकों ने इन्हीं परिस्थितियों को अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त कर समाज को अपनी और आकर्षित कर लिया है।

इसी अनुसार मेरी दृष्टि उभरते हुए साहित्यकार भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य पर गई, जिन्होंने अपने साहित्य में वर्तमान जीवन की बेबाक सच्चाई को प्रस्तुत किया है। जिस तरह से सामाजिक पतन हुआ उसी तरह से लेखकों की लेखनी भी पतन की ओर जा रही है किंतु भुवनेश्वर उपाध्याय इससे अछूते ही हैं। उनके साहित्य में भाषा की सुंदरता है। नग्नता को दर्शाने के लिए उन्होंने भाषा को निचली सतह पर नहीं लाया। यही उनकी विशेषता है। फलस्वरुप मैंने भी इन्हीं के साहित्य पर शोध कार्य करने की ठानी। इसी दृष्टि से मेरे मार्गदर्शक मित्रवर डॉ.रंजीत जाधव से बात की। उन्होंने भी विषय की व्यापकता एवं नवीनता को देख अपनी सहमति प्रदान की। चर्चा के उपरांत निम्न शीर्षक को शोध का विषय बनाया।

अनुसंधान की परिकल्पनाएँ (Hyopothesis of the Research):-

प्रस्तुत शोध-कार्य के लिए निम्नांकित परिकल्पनाएँ रखी है -

1. भुवनेश्वर उपाध्यायजी के कहानी साहित्य में मनुष्य जीवन की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं का बडी मात्रा में अंकन हुआ है।
2. भुवनेश्वर उपाध्यायजी ने अपने कहानी-साहित्य में आज के मनुष्य की अकेलेपण की समस्या का बडा यथार्थ चित्रण किया है।
3. भुवनेश्वर उपाध्यायजी ने उपन्यास-साहित्य में दम्पति जीवन की समस्याओं की झाँकि देखने को मिलती है।
4. भुवनेश्वर उपाध्यायजी के कविताओं में सामाजिक विकृतियों का चित्रण हुआ है।
5. भुवनेश्वर उपाध्यायजी के व्यंग्य-साहित्य में वर्तमान की राजनीतिपर व्यंग्य किया गया है।

अनुसंधान के उद्देश (Objectives of the Research) :-

प्रस्तुत शोध-कार्य के निम्नांकित उद्देश है -

1. भुवनेश्वर उपाध्यायजी के साहित्यिक व्यक्तित्व की बडी मात्रा में विवेचना करना।
2. भुवनेश्वर उपाध्यायजी द्वारा लिखी गई विभिन्न कृतियों का चिन्तन किस भूमि पर उपस्थित है, यह जानना।

3. भुवनेश्वर उपाध्यायजी के लेखन का उद्देश कला के प्रति अधिक समर्पित है या जीवन के प्रति यह जानना ।
4. भुवनेश्वर उपाध्यायजी के कहानीयों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करना ।
5. भुवनेश्वर उपाध्यायजी के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करना ।
6. भुवनेश्वर उपाध्यायजी के साहित्य में चित्रित समकालीन परिदृश्य एवं समस्याओं का अध्ययन करना ।
7. भुवनेश्वर उपाध्यायजी के साहित्य का शिल्पगत अध्ययन करना ।

अनुसंधान की उपयोगिता (Importance of the Research) :-

किसी भी कार्य की अपनी उपयोगिता होती है । बिना उपयोगिता के वह कार्य तथ्यहीन बन जाता है । प्रस्तुत शोध कार्य की उपयोगिता निम्न प्रकार से है :-

1. भुवनेश्वर उपाध्याय पर किया जाने वाला यह प्रथम शोध कार्य होगा, जिसके माध्यम से हिंदी साहित्य में भुवनेश्वर उपाध्याय का स्थान निर्धारण होगा ।
2. वर्तमान परिपेक्ष में भारतीय जन जीवन का अध्ययन होगा एवं इस शोध के द्वारा सामाजिक कार्य करने वाली संस्थाओं को अपने काम में आसानी होगी ।
3. जनजीवन/समाज जीवन पर काम करने वाले विविध शोधार्थियों के लिए प्रस्तुत शोध कार्य मील का पत्थर साबित होगा ।
4. आने वाले समय में लेखक पर काम करने वाले शोधार्थियों के लिए प्रस्तुत शोध उपयोगी सिध्द होगा ।

अनुसंधान पध्दतियाँ (Research Methods) :-

प्रस्तुत शोध कार्य के लिये विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक तथा वर्णनात्मक अनुसंधान पध्दतियाँ अपनायी जायेगी ।

शोध कार्य का शीर्षक एवं उसकी संक्षेप में रुपरेखा निम्न प्रकार से होगी -

अध्ययन-विभाजन (Chapterization) :-

"भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में व्यक्त जन जीवन"

प्रथम अध्याय :- भुवनेश्वर उपाध्याय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय :- भारतीय समाज का वर्गगत अध्ययन

तृतीय अध्याय :- भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में व्यक्त सामाजिक जन जीवन

चतुर्थ अध्याय :- भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में राजनीतिक जन जीवन
पंचम अध्याय :- भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में व्यक्त आर्थिक जन जीवन
षष्ठ अध्याय :- भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में व्यक्त धार्मिक एवं सांस्कृतिक जन जीवन
उपसंहार

प्रथम अध्याय :- भुवनेश्वर उपाध्याय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय के अंतर्गत भुवनेश्वर उपाध्याय का जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा, आजीविका विवाह परिवार एवं लेखक द्वारा रचित साहित्य का लेखा जोखा प्रस्तुत कर उसका विश्लेषण किया जाएगा तथा निष्कर्ष दिए जाएंगे।

द्वितीय अध्याय :- भारतीय समाज का वर्गगत अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत भारतीय समाज का उच्च, मध्य, निम्न आदि वर्गों में विभाजन कर उनका अध्ययन एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

तृतीय अध्याय :- भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में व्यक्त सामाजिक जन जीवन

इस अध्याय के अंतर्गत भुवनेश्वर उपाध्याय की कविता, कहानी, उपन्यासों में व्यक्त जनजीवन का जायजा लिया जाएगा, जिसमें पारिवारिक संबंध, सामाजिक व्यवहार, रिश्तों में आया बनावटीपन, प्रेम, त्याग, समर्पण आदि विभिन्न आयामों द्वारा प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन किया जाएगा एवं निष्कर्ष दिए जाएंगे।

चतुर्थ अध्याय :- भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में राजनीतिक जन जीवन

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत भुवनेश्वर उपाध्याय द्वारा रचित कविता, कहानी, उपन्यास आदि का अध्ययन कर उक्त अध्याय में राजनीतिक परिस्थितियों का अध्ययन किया जाएगा एवं निष्कर्ष दिए जाएंगे।

पंचम अध्याय :- भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में व्यक्त आर्थिक जन जीवन

उक्त अध्याय के अंतर्गत भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में व्यक्त पूजा-पाठ, अर्चना, परंपराएं, रीति-रिवाज खानपान आदि का सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाएगा एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाएंगे।

षष्ठ अध्याय :- भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में व्यक्त धार्मिक एवं सांस्कृतिक जन जीवन

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत परिवेश की आर्थिक परिस्थितियों का साहित्यकार द्वारा किया गया चित्रण का आधार लेकर समाज मन पर उसके प्रभाव एवं दुष्परिणामों का उद्घाटन किया जाएगा साथ ही निष्कर्ष भी दिए जाएंगे।

उपसंहार

उपसंहार प्रस्तुत शोध का निचोड होगा जिसमें लेखक द्वारा स्थापित तथ्यों, संकल्पनाओं को स्वीकारा या नकारा जा सकता है। कुल मिलाकर उपसंहार में निचोड प्रस्तुत किया जाएगा एवं निष्कर्ष दिए जाएंगे।

ग्रंथ सूचि :-

भुवनेश्वर उपाध्याय के मूल ग्रंथ -

बस फुँकारते रहिये व्यंग्य संग्रह - के.एल.पचौरी प्रकाशन, इन्द्रापुरी गाजियाबाद, 2019
समय के दायरे में (कविता संग्रह) - साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश भोपाल, 2015
दायरे में सिमटती धूप (कविता संग्रह) - जीएस पब्लिशर डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2017
समय की टुकडियाँ (कहानी संग्रह) - जीएस पब्लिशर डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2017
फिर वही से (कहानी संग्रह) - वनिका पब्लिकेशन, 2017
महाभारत के बाद (उपन्यास) - रेडग्रैंब बुक्स, इलाहाबाद, 2018
एक कम सौ (उपन्यास) - अमन प्रकाशन, कानपूर, 2019

कोश-ग्रंथ -

'नालंदा विशाल शब्दसागर', सम्पा. श्री नवल जी, आदिश बुक डिपो, दिल्ली
'बृहत् हिन्दी-मराठी कोश', सम्पा. श्री.गो.प.नेने/ श्रीपाद जोशी, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे
'हिंदी साहित्य कोश (भाग1, भाग2)', सम्पा. धीरेन्द्र वर्मा
'हिंदी साहित्य कोश', सम्पा. डॉ.महेंद्र मिश्रा, राज प्रकाशन हाऊस, जयपूर
'हिंदी विश्वकोश' (भाग 1 से 5 तक) सम्पा. डॉ.महेद्र मिश्रा, अरिहन्त प्रकाशन, जयपुर

पत्र-पत्रिकाएँ :-

1. 'कथा-बिम्ब' (जनवरि-मार्च 2005)
2. 'धर्मयुग'
3. 'नया ज्ञानोदय' (अगस्त 2006)
4. 'प्रकर' (अगस्त 1988, दिसम्बर 1993)
5. 'भारतवाणी', दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड
6. 'राष्ट्रवाणी', महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे
7. 'विवरण', हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद, नामपल्ली
8. 'समकालीन साहित्य'
9. 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान'
10. 'सारिका' (1972, जुलाई 1974)
11. 'साहित्य अमृत', 4/19, आसफ अली रोड, नई दिल्ली
12. 'हंस', अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 2/36, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली

संदर्भ-ग्रंथ (Bibliography) :-

1. शब्द-शब्द -मानुषगंध सम्पा. डॉ.वेदप्रकाश अमिताभ, ज्ञानगंगा, नई दिल्ली, 2012
2. विवेकी राय के उपन्यासों में ग्राम-जीवन, डॉ.चंद्रशेखर तिवारी
3. मृदुला गर्ग के कथा-साहित्य में पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन, डॉ.अनु पाण्डेय
4. दशम् दशक के हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक और नारी संवेदना, डॉ.सन्मुख नागनाथ मुच्छटे
5. जगदीशचंद्र के उपन्यासों में ग्राम्य जीवन, डॉ.शोभा सुखलाल दिब्यवीर

शोध-छात्र
महेबुब शरफोद्दीन मंगरुले
हिंदी विभाग
आझाद महाविद्यालय,
औसा, जिला -लातूर

शोध-निर्देशक
डॉ.रणजीत जाधव
हिंदी विभागाध्यक्ष
कै.व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय,
बाभळगाव ता.जि.लातूर